

### प्रस्तावना ।

एको मे शाश्वतात्मा सुन्वमसुन्व भजो झान दृष्टि स्वभावो । नान्यत् किंविधिनं मे नतुषन करण भ्रातृ भाषी सुन्नादि ॥ कर्मोद्भृतं समस्ते चपटमसुन्नदं तत्र मोहो झुवा मे । पर्याताच्येति जीवम्बहितमवितयं मुक्ति मार्ग धयन्त्रम् ॥४१६ ॥ ( अनिविद्यति )

श्रीभितिकाति आवार्य वर्तत हैं. "रे स्व ! तू ऐसा विन्ततन वर कि में एक हूं, अविनायी आत्मा हूं, मुखदुसको आप ही भेगते वाल हूं तथा जान दर्शन न्यावक धरी हूं। धरीर, धन, इन्द्री, भई, सी, जगत, मुख आदि कोई भी अन्य जीव मेरी नहीं हैं: क्योंकिये मई जगदुके पर्दाप वर्तने उत्तक, संवत् (क्यानंतुर) और अन्तने दुस्तदाई है। इनमें मेर करना मेरी मुस्तित है और तू अपने करनाय वरने से से मेर-नार्यका अध्यय वर्ष।"

प्रिय मत्य मुनुकृत ! मेल काने ही कानास सुद्ध निहंतर असन समाव हैं। मेल का काना कामन काहीन मुगल का है, मालाइ सुद्धीरपेयास कामी है, मालाइ कामस्वरूप हैं। ऐसे नितमकार नामते निये कामस्वर्ध माला ही मास्तर्य है, निमाले अनुमानका कामन कहने हैं

्रमुनिक्ते प्रस्तान प्राणयम है और नहर्मण है। कृतिका सभा प्रस्तानिक स्मित्रकर राज्येत्रकी पुक्त केंन्सर कीर्याद करते हुक्तनक कुल स्थान प्रस्तानिक समावे गुणित अनुस्त अ चाहते हैं, परंतु उनको साधु संगतिकी अन्नातिसे सथा स्पाद्वादनयः द्वारा संगठित पदार्थ मालिकाके ज्ञानका अनुभव न होनेसे वे आरी

भावनाको पूरी नहीं कर सक्ते हैं।

तुष्क अनुमबके द्वारा जो एमदो श्रीसमयसारमी, श्रीपरमात्मप्रकारमी तथा अनुमबसकारामी आदि अच्यातिमक सम्मित्ते हुआ है। नैनामित्रके अन्दर ता॰ २१ महें सन् १९०९ के अंकसे छेता॰ १० अक्ट्रबर १९९१ के अंकत क अनुभवानन्द नामके केवाँकी प्रकारीं किया था। अब हमारे पास महत्ते माहयोकी रिएण हुई कि इन केवें

को पुस्तकाकार निकाला भाय, इससे यह पुस्तक प्रगटकी गई है।

आत्मानुभवके रसिक मुमुक्षुजनोंके हितार्थ ही हमने अपने उप

पाटकोंको उपित है कि इसके हरएक रेलको एकन्यों मैठकर पुन. पुन. कई बार बांचे। वब बांचते र उपयोग पि होगा तब परमानुमक्तरसका स्वार आवेगा । यदि शीप्रतासे ह<sup>र्ग</sup> पुस्तकों पुन्तायाग तो आनत्त्वका विकास करित होगा। यदि प्रमाद व अलानवदा इन टेसकेंके संगठनमें कोई अञ्चार्किर

यदि प्रमाद व अज्ञानवद्या इन छेक्षोंके संगठनमें केई अद्याचित्र रह गई हों तो विद्वजन हमें क्षमा करते हुए सुधार कर पड़े तथ हमें सुचना दें ताकि द्वितीयाज्ञात्तमें सुधार दी चांय।

हमें सुचना दें ताकि द्वितीयाज़ूक्तिं सुभार दी जाय । पूक संशोपनमें नो कुछ अशुद्धया रह गई थीं, उनका शुद्धाशुद्धि पत्र इस पुस्तकके शुरू में ही छमा दिया गया है; पाठकमण, पहरं

पत्र इस पुरतकत शुरू में हा छना दिया नेपा है। पाठकरान, पर उसके अनुमार अग्रुद्धिया मुघार छेने फिर पुस्तकको पदना शुरू करें

मुल्तान शहर ता॰ <-९-१९१२ ई० } जीनलमशाद ब्रह्मचारी ।

# विषय सूची।

6411	
• विषय,	
अगम दुर्ग अञ्चत चोरी	पृष्ठ संख्या.
भोनन-सत्कार	7
541-21mm	₹ 9
मेरी महिमा युद्धमें गृहत्य-मुख	•
1116-4H	<b>?</b> ?
दराह्मसाणिक धर्म	15
आगारी साष्ट्र बन-विहार	16
ॲत्निक रामायण	२२ २३
रभवर्ती-वाटिका	29
सन्यकीकी अपूर्व सामायक आर्त्माक बार्ट्स — कै	79
आत्मीक बाझ तप और अद्भुत कपाय अप्लोक बाझ तप और अद्भुत कपाय	₹ o ₹ ₹
गुकामें विश्वास	₹७
मिरयान्य गुणस्थानीकी दशाः सम्मन्द	79
मामाउन र्यास्थानीको बदन	8 1
	84

Stationer Co.	
भिश्रमुगम्मानमा दिगान	88
भरिष्तवृत्रम्यानीको नित्त निषि दशीन	41
भागतम् मीस महत्रमे प्रतेश	9.8
यमसम्पर्भः हो भाग्रासमा	
भागनविद्यानी नामना	419
मन्दरमारी बातन	44
भनि इति हरण स्वयवर	(4
mailten and adda	4.8
मुभागां गामधः विसम	**
उत्राचन रहा क्षार्थ	80
र्मे असे में - मर्नेनस विशाप	20.
सन्तरी आरहेन्द्रव	, ,
भवेत रेक्ट्र	·* \$
दित्व -दिवर -माम	* \$
मेंग अक्षेत्रम	44
	40
रंग १व	19.00
magain graphin	63
न्त्रवर्ण अस्त	
mark-west	< 3
Will & proprie	< 1
	10
Tania - mark	6+
न द ने हू न बन्ध ह	< 3
रिकालने हे हु हू	* /

इन्द्रियमार्गणार्ची खोडी राक्ति	63				
कायमार्गणामे आकुल्ता	९६				
में अन्त्रय हूं	92				
योगमार्गणार्ने हगमगाहर	{00				
देवमार्गणाकी आकुळवा	१०२				
क्याचाँकी वंचकता	१०३				
ज्ञाननार्गणाकी महस्त्रता	१०६				
संयमनार्गणाने स्वरूप विकाश	१०८				
दर्शन मार्गगाका अवलेकन	११०				
हेरया मार्गणामें मक्त्रमण	११३				
मन्यामव विकल्प न करना	११६				
सन्यक मार्गणाकी झलक	116				
संज्ञी क्संजीकी कलना	१२०				
अहारक मार्गनाका विकल्प	177				
पंच महाँची छ्य	878				
अनुभव मुख ही मार है.	१२६				
ं शुहाशुह पत्र ।					
ऱ्या पंक्ति अञ्चद	गुद				
ं दे स्वी	मान				
> २ व्य	समय				
४ सान	===				
' ५ से हाथ	नेहच				



( 0 ) 18 सात ₹ ₹ शांत नागा 23 जगा हरी 3 3 हाह सम्पदा 1 सन्यक्ता हर्श 93 द्यप्टि सन्यक्टर्धा Ę नेसुइ सम्पक्टांटि 19 बेसुष को शांवकर देवी को शांवकर देवी है हैं और अपने प्र- और अपने प्रत्येक त्येक सन्पेटनमें सन्पेटनमें इस रातकर देवी है और जापी अल्लाको ल्पने प्रत्येक सम्मेलन में इस नापी अस्तिको ₹ 0 को ٩ की (00 ی } (000 कार्यो ۶ बार कायाँ < घारे मन्यक्ट्टि ٤ परमन्पन्हां है पहले नेने ननन करने 7-1-17 कृतकृत्य करा FT 6 3 44 ÷335 で 最 流

		( < )	
200	\$8		२ 🖣 द्विरूपवर्गधारा
306	\$10	प्रतिमा समान	प्रतिभासमान
555	Ę	उपयोगका	उपयोगकी
\$ \$ 8	4.8	कर्मबंद	कर्मनघ
११<	<	कारणङ्बिद्धारा	करणङ्गिद्वाराः
828	20	<b>जी</b> वका	जीवको
१२४	\$8	आहरको	आहारको
888	10	श्रमुपी	स्वरूपी
126	•	काछा	কান্ত
१२६ -	88 .	ब्यवहारक	ब्यवहारिक
<b>१</b> २८	ę	झलकाती	शलकाता
	=		

श्रीवीवसगाय नयः।

## अनुभवानन्द

### अगम दुर्ग ।

いるころとろうとのころ

( { } )

न्द मंद्र सम्बद्ध स्वयं यह होहे. सर्

र्मिह पदकी गुप्त दाक्ति अपने अनुभवमें आ नाए, क्षणमें ही स<sup>ाम</sup> पदको उम्मूलकर निर्मय हो। अपनी शक्तिको अपनेमें मान्यता है नेमे निराक्छ रहे. सद संगतिमें न पड़े। अपनी मानि मुख

(2)

मुप्तमे अन्य राग, द्वेष, बोब, मान, माया खोमादि भावकर्म, झान राई आदि द्रव्यक्रमे, द्रारागदि नाक्रमे-सर्व अन्य ही हैं।वेशणिक, में भी नाशी है। वे मूर्तिक, में अमृतीक हूं। वे दुलस्त्रभाव, में मुसस्वर्ध है। व उपाधिकप, मैं निल्याधि है। वे सहलक, मैं नि कर्लक हैं। पराधीन, में स्वाधीन है। उनका मेरा नगभी मेलनहीं। जो उन्हें

और अपनी मानी ही दलदाई है। मैं ही फिद्ध निश्ंतन परमारमा हूं

मेरी सम्यत्ति अविनाशी, उनकी विमृति विनाशीक । में अपने निर्म आत्मानुभवकी भावनामे परमतुष्त है। मुजमें जन्म, जरा रोग, ब्यापे नहीं, कर्म रिष् मेरा मुह देखने नहीं; मेने अपनी अनुमृतिकी मूर्टि में ही भरना भगम दुगें बनाया है, उमीमें निवास करता अरन

संगति करे वह मदीभा हो । त्रो मेरी मगति करे वह निर्देशी हैं।

विर्तुमृति रानीके माथ मनमे औडा कर रहा है। मुप्ते मोप्तन, बर्फ आमुराण, मुगप केप, नेज, कुळेळ, दाव्या, आमनशी आरव्यक नहीं। भाग मुखासमूह, अवन भीजन, अवनी निसंद प्रतेशावसी.

आपना वन्त्र, अपना बद्धारूप द्यार, अपना शास्त्राण, अपना शान-

**अरानी मृ**गा। अपने नन्त्रयन अपन <sup>१</sup>प नपन भाग्य-

क्रियों, भाग नव करेर अपने ध्वस्य प्रत्य अपने शस्य अपना निरायण्यन व्यव । अन्य ब्रह्म ह दक्त संपर्धी मेरे । क्षेत्र मार्ग चिर्णमान्त्रीय याच्याचाक्ष विश्व मानाच ४१ - मानाच्याचक

े अड्डत शाकिका आप स्वामी हूं। मैं सबको देखता हूं, परन्तु मुझे कोई नहीं देखता । मैं किसीके पास जाता नहीं, परन्तु सब मेरे निर्मल आस्मदर्गणमें (जो मेरे ही अनुगम शब्या महरूमें रूगा है ) आपसे आप अपनी समय २ की परिणतियोंको लिये आ आ कर मुझे अपना रूप दिखा रहे हैं । मुझसे अन्य जन परस्पर एक टूसरेको रागसे घ्रहण करते

ि दिता रह ह । मुन्नस अन्य जन परस्तर एक दूसरका रागसे महणकरत हैं. परन्तु में अपनी चिदनुमृतिरूप पटरानीके तिवाय किसीकी महणकर पर—पद—रत नहीं होता। जिस सुखको पानेके हिंद मुमसे अन्य जन तरसते हैं हैं, उस आनन्दको पाकर में अनुभवानन्द रूप रहता हूं।

# अद्भुत चोरी।

₹

आत में, जो अनादि काल्म मोह, मदिराके तीव नदोंमें बेहोरा हो रहा था, किञ्चित् मदकी हीनतासे जी सबेत होता हूं तो अपने ज्ञानानंद स्वरूप अरूप अविनासी अर्थेड विलेकभूप चतन्य प्रभुक्ते अपनी दृष्टि मन्मुल न देख विहुल होता हूं और छन बीतराम स्वस्थाव—गुप्त स्वामीम गग प्रगट करनेको दीड़ता हूं, जिम नगत् कृतिम रूपकी प्रस्थक चमककी उमकमें जाना हूं, बहु ही जलके अममें बालोनको प क्षेत्रीन हो अधिक अधिक

अपने प्रेष्ठ इष्ट ईन्डामे मिलेन्क रुचिक्य-लुपमे बाधित होता हूं। अपने परम केहीकी खेजमें पलयमान होते होते में एक शीतल मम्पक वृक्षकी अधामे आकर विश्राम हेला हु और बहु



परिणतिसे उद्योग करता हुआ सर्व विभूति चुराकर अपने विकोटके भीतर गुप्त भंडारमें रखता हूं और उसको भीगकर मुखी होता हूं। चद्यपि में मूपकवत् व्यवहार करता हूं, पर में कभी अपने

अवीर्ययतको संडित नहीं करता । यथि में स्वात्मधन मुराकर स्रता हूं, तथापि जहांसे स्राता हूं वहां वह धन वैसाका वैसा ही विना एक परमाणुको कन किये रहता है । यह कुछ मेरी चोरीमें अद्भुत शक्ति हैं कि, निसको मेरे स्वामी भट्टे प्रकार जानते हैं और यह उनकी ही आज़ा हैं कि ऐसी चोरी करो, तुम कभी अपराधी नहीं हो ।

आन इस वृक्षको शीतल विवेकक्षी छायामें बैटकर और अपने इष्ट परमेष्टी निरंजन परव्रअरूप स्वप्रभुका अनुभवकर सर्व बासनामे रहित अनुपम अनुभवानन्दको प्राप्त होता हूं।

### भोजन-सत्कार ।

. चतन्य अभिराम गुणधाम आत्नारामका विधानन्तप पद अटल,

( ३

अभय, अवल, अविनाशी और अमयोद्रूप है। जिम पद्की दीप्रिमन किरणावली मजवलीतमको अणमावर्मे विल्या कर देती है: जिम पद्के सम्मान पर्यवमान परास्तम स्थित हो उहरते मही, जिस परावे परी, जिस्साम विहारी अविकारी सरवारी रहका अनसक्त तक भी जिल्पा-सम्बद्धी प्राप्ति नहीं तेने राजे अभिन्यी, भव बाममें उदामी अपनी मोहणामी कारनेने हुलामी आज अनार प्राप्ति प्रवेशकर भेदज्ञान खड्ग छै चिरवाल प्रवेशित रिपुदलको संहार कर-नेके अर्थ उद्यमी हए हैं।

इस खडगकी दीक्षि पाते ही शत्रुओंके दल कहां निला गए—से। कुछ पता नहीं । वे रहें या जाए उनकी ओरसे भयका विध्यंसकर निर्भय हो अनुभव रसका ग्रेमी अपनी निर्मल अनुभृति देवीका दर्शन-

कर उन्मत्त हो उसके अद्भुत रूप रसका पान करते २ ऐसा एका-सन हो गया है मानो एक रफटिकमणिकी पुरुपकार मूर्ति ही है। ऐसी स्फटिकमणिकी पुरुपाकार मूर्तिमें अपनी निर्मछताके कारण भी जो पदार्थ प्रतिमापित होते हैं, वे सब स्वय अपना जैसाका तैसा

ह्रप देख अपनी पर्यायके अभिमानमें अपने र स्थलते सरक कर कभी भी इस मुर्तिमें आते नहीं और न यह उन्मत्त पुरुष दौडकर उनकी तरफ जाता है। इस अंतरग भूमियें रमनेवाछे पुरुपका स्वमानका अभिमान इस मुरुपको सर्व अन्याकी शीतिसे बुडाकर एकाकी कर देता है; तथापि इस मुग्यको सुघ नहीं. यह किसीकी भी परवाह न कर अपने अनुभव रसके स्वादमें मझ है ।

यद्यपि यह उन्मत्त है संयापि इसकी अनुभूति देवी सदा साव-घान है । इसके राजु, नी इसकी खड़गकी चमकसे हुस हो गए थे, रह रहकर इसको दबानेके लिये आते हैं। उनका मुख देखते ही अनमति देवी इसे चिताती है। यह उसी क्षण मेद्-झान-असिको चम-

काता है । वे दुश्मन फिर गुप्त हो जाते हैं ।

इस प्रकारकी उन्मत्तता उन्मत्त पुरुषको कैमा बना देती है, यह

े बह परंप ही जाने या उसका निज निर्मल रूप जाने। इस ज्ञानमें



वस्त्रोंको फेंकता है और विना किसी ओर देखे नग्न हो स्वरस-सरो-बरमें प्रवेश करता है। शांत, मिष्ट, निर्मेल स्वरस पूर्ण, स्वानुमनकी वैराग्य पतन द्वारा धेरी हुई, कछोलें जब उस पुरुपके तनकी स्पर्शत करती हैं और अपनी शांतता उसके प्रदेशोंके अन्दर प्रदान करती है तब उस पुरुषको जो भवातापकी शास्त्रासे निराकुल्या प्राप्त होती है उसको वही जानता है या ज्ञानानन्दी मिद्र परमात्ना आनते हैं। अपने निर्मल विवेक्ते चुल्लुओंसे शुद्ध स्वरस-जल लेकर अब अपने स्वरूपायल मुखके भीतर क्षेपण करता है तब वह पुरुष स्पाको शामनकर अनुपम जलकी अपूर्व मिष्टताका स्वाद हैले सुनि रहित होता है। पीने पीते अधाता नहीं, पीते पीते कभी पेट फुलता नहीं, ऐमे जलका पानकर प्रकुाहित बदन व्यक्ति अपनी इाक्तिकी व्यक्तताकी शब्क पाकर सचेत होता है और उस सरी-बरमें ही निरन्तर अवगाह करनेका संकल्प करता है। अपने तनहों हुल्लायमान देख और मद-वनमें मटकते हुए अपने पूर्व माथियों में अपनेको श्रेष्ठ मान ज्यों ही वह अपनेको पर माल्मा, परमध अविकारी, मोश-आम-विहारी, अनुल पराक्रमधारी अवलोकन करना है कि यशायक इस मानके अभिमानमें उन्मह हो सर्व जगतको भूग देख्य भावको गरा अद्वैत हो, निजनान-जनमें विमानित रह स्वरम मरेखरके भीतर उत्मन वेष्टा करने ज्यात ᢓ । मारे मरेजरको अपना नृत्य स्थान जना नाचना है । ऐसे नृत्यक्ष करिया, निकार सम्यन्त-गुण रिया, स्वपटमें बर्मेशा, नः में मृत्य करने २ रकत है अपने तनको पहिले समयमे अधिक



मेरी महिमा ।

भाष्ट्या (५)

( १°)

आन में कर्तापनेके कटुक, विरुद्ध और नि.सार मन-विद्यास्त्रों खागकर निम द्वारा-ट्वा स्वस्थायमें क्टडील करनेके लिये उचत हो गया हूं । मेरा बनाया मन-विकार मुत्ते ही विय-आहार हा हो चुका है । निस विकारने मुत्ते परार्थान क्यामें हाला और मेरी सर्व-मताका आयात किया जस शकुकन् प्रयंचवारी व्यवहारीसे मुने

क्या प्रयोजन ! में चेतन्य-रसका चेतन्यमई घट ह । मेर

उपादान और निमित्त कारण एक ही है । पुते त्रिलेकमें भरें
किसी परमाणुके अवस्तृके मामसे मतल्य नहीं । मैं कभी किसीयों
मनाना नहीं । मैं कभी किसीयों निपाइता नहीं । मैं कभी किसीयों
मनाना नहीं । मैं कभी किसीयों निपाइता नहीं । मैं अपने स्थायामें अविचलित रह सदा निन रसका ही पान करता हूं । मूंते केये,
मान, माना, लोग और उनके पिता राग, हेव वसा महाशिद्या मोस्टिंग कुछ भी सम्मन्य नहीं । मैं शांनरूप हूं, वे उद्देशरूप हूं । मैं शानरूप हूं, वे अज्ञानरूप हूं । मैं निप्त्यक्तप हूं, वे क्रियाबान व्यवहारूप हूं मैं गुणनियान हूं, वे गुण किस्त्र औपण निपास हूं । मैं निर्देश्य परार्थ हूं, वे अज्ञावस्त्र हैं । मैं निर्देश हूं, वे वस्तरित हूं । मैं एक्सर्य एक रूप हूं, वे अनेश्रावकरूप हूं, वे त्यसारित हूं । मैं

मेरे कमें । मेरे निर्मल ज्ञान दफ्तरमें कर्ता कर्मका शब्द ही नहीं । मै

<sup>•</sup> अविभाग परिच्छेदकपगुत्र.

शुद्ध आहार-भोजी, अपनी शुद्ध परणतिका निरंतर खोनी हूं। मुझे भेरे ज्ञान—साम्राज्यका प्रवन्य है, निस प्रवन्धमें अनुरक्त में जगत्के प्रपंचरूप प्रबंधते असन्बन्ध हूं। मेरा ज्ञान-साल्राज्य मेरी ही निर-न्तर सावधानी और परम पुरुषिके बलसे अडल है । यद्यपि में त्रिलोकालोकमें न्यापक हूं, परन्तु सदा ही निज यलको न तजकर अन्यापकरूप हूं। यद्यपि में इन्द्रिय-प्रामींकी रचनासे शून्य हूं, तथापि अपने अर्तान्द्रिय गुण बामका घाम होकर अशुन्य रूप हुँ; यद्यपि में निज परिणाम-कर्मके करनेसे कर्ता हूं, तथापि परक्र्यृस्वके अभावसे सदा अकर्ता हूं। यद्यपि में निज परिणति रमनके स्वादका भोका हूं, तथापि परपदार्थका स्वाद न टेकर सदा अभोका हूं। यद्यपि में परवस्तुओं की प्रवृत्तिकी इच्छासे रहित सदा कृतकृत्य हूं, तथापि निनात्मीक स्वस्वमयरूप प्रवृत्तिमें प्रवर्तन करता हुआ सदा अकृतकृत्य हुं । यद्यपि में अपने आत्मीक द्रव्यका घारी अपने द्रव्यको सदा ज्योंकी त्यों रखकर नित्यरूप हूं, तथापि केवलीगम्य पर्गुणी हानि-वृद्धिरूप समुद्र-क्लोल्बन् अगुरुल्चुगुण परिणमनके कारण नित्य पर्य्याय द्वारा व्ययोत्पादको सहन करता हुआ अथवा नित्य अपनी अवस्थाको बदलनेवाले होय पदार्थोंके मेरे निर्मल ज्ञान-दर्पणमें समय २ परिवर्तन होते हुए ज्ञेचाकारोंकी अनित्य स्थितिके झलक-नेके कारण उस झटकनको धारण करता हुआ अनित्यरूप हूं। यद्यपि मैं केवलज्ञान-तनका धारी होकर अपने जाति स्वभावधारी केवल्ज्ञानियोंसे प्रत्यक्ष और सम्यन्ज्ञानियोंसे परोक्तरूपसे दर्शन योग्य हु, तथापि निजानुभवरहित उद्मम्य अज्ञानियों द्वारा सदा ही अदृश्यह्म 🐇 निकाछी है, परमपदभागि परमेष्टी, पंचनाम व्यवहारी, अविकारी, साम्य प्रचारी, मुख्कारी, भेरे ही अनुमक्की अपूर्व महिमा है। पुमे जो कोई विभाव भार्चोका और परद्वव्योंका कर्त्वो कहे वह सर्व अज्ञानी और अनुमन-रसरहित, बिरसका स्वादी, मोह व्यापिन

पीडित परमानी है। निन्होंने आत्मबाग छगाया है और उसमें सगुणरूपी सुगंधित पुष्पोंको उगाया है वे आत्म-मोही मुद्दे कभी भी परका कर्ता कहनेके नहीं । में आज अपने स्वतंत्र बलके अभिमानमें जन्मत हो अपने आत्म-चनके मीतर झीड़ा करता हुआ स्वात्मगुण पुणारी मुगंबको छेता हुआ और निन परिणतिरूपी अद्धाक्षिनीके साप सैर करता हुआ परआनन्दांसे अनीत अनुभवानन्दका स्वाद हेता हूं। युद्धमें गृहस्य-सुस्र । निम राष्ट्रने अपने तीन पराज्यमें तीन छोकके संसारियोंके नीतकर अपना विनयका देवा बनाया है और मी अपने बिछोक-विनरं अभिमानकी मंदिरा पीकर उन्मत्त हो युद्ध-स्पल्नें आकर मदा हो अपना पेट फुट्य रहा है- ऐसे शतुको भीतनेके लिये आन में अपगतिन भेरतानक धनुष हायमें देकर खड़ा हो गया है। में वनपरी देशक ममने क्रिमीकी भी नावत नहीं है कि जो दिक महे । मेरे मेटज्ञान बन्ज्यमे निक्न्य हुआ बीतराग भावका बाग



( \$8 )

गया, परन्तु ज्यों ही मैं अस दम छेता हूं कि वह निर्छन्त किर सामने ताकता है। सन है, मैं पंचम गुणस्थानके रेनिमेंटका सिपाई हे । मेरे वाणोंमें उतना बल नहीं नितना श्रेणी-आरूट टेफ्टिनेन्टॉर्ने बाजामें होता है, परन्तु में अब आङस्य करनेका नहीं, में ती इसको बारवार भाण मारे ही जाऊंगा । मेरा यह अम्यास ही मेरी उन्नति करेगा और में कुछ कालके मीतर अवस्य श्रेणी आरूउ ही हीत्र बाण चळा इस शपुको मार मारकर निर्वत कर दंगा और भारहरें दर्नेपर पहुंचते ही इसको ऐसी अधनरी हालतमें कर दूंगा कि यह निर्वेत्र आंखोंसे मेरी ओर देराता रहे, परन्तु अपना सारा अभिमान और अपना सारा बन मूछ जाए । में जहां चीदहरें दर्नेने वहंचा और अपने अनंतगुणवप सेनाका स्वतंत्र कमान्डर-इन-वीक (सेनापति) हुआ कि इचर इस शतुका भी भाणान्त हुआ। मै जानग हं कि यह वैकियक रूप घारी है, नाना रूप होकर नाना नीवेंकी स्ताता है। इसकी नो अनादि अनंत शक्ति है उसकी यह प्रयोग तें करेहींगा । करे, निनमे दुर्भाग्य हैं उन्हींपर इसस्य आव्यमण होगा । में तो समप्त गया हूं। में तो इसकी नस नससे जानकार होगया हूं। मेग इमका मुकाबना ती बोड़े ही दिनके लिये है। मुझे निश्चय है कि में हमे एक दिन मारकर शिरा दूंगा और तब यह अनंत कार्ट्स भी मेग मुशबना करने हैं। लडा नहीं हो सका। मुंगे अब भी बानन्ट है. मेग कुछ भी निमाद यह आश्रव कमवरी शत्रु वहीं कर मन्ता । यद्यपि मैं इस शत्रुप्ते युद्ध कर रहा

हर्मण क्याम के आध्यवने प्रदेशका है।



#### विवाह-रस् ।

(७)

परमामृतके प्रशहसे परिपूर्ण, स्कटिक समान निर्मेख, खच्छा चिज्ज्योति विलासी, अविनासी, अत्यानन्द्धामप्रशासी, वर्मराहुप्रमन रहित, विभावमेघाडम्बर्गिरहित, स्वभावपरिणमनविकाशाहि झान-चद्रमा आज मेरे स्वच्छ हृदयहून आकाशमें उदयको प्राप्त हु<sup>अ</sup> है। मेरे अद्भुत चंद्रकी चांद्रनीके सामने निधर देखता हूँ पीतत पीतत्वही विदित होता है। कहां गए वे राग और द्वेप, जिनके व-दामें पड़ा हुआ में किसीको द्वाम और किसीको अदाम देखता था। धन्य है आजका समय । जिन दुरोंने मुद्दें कभी पापी और हमी पुण्यात्मा कहलाया और मुप्ते अनादि काल्से अत्यन्त दुःस दि<sup>वे</sup> उन्होंकी सुरत आन में नहीं देख पाता हूं। मी में बहुत ध्यानमे देखता हं तो में अपने चंद्रमासे भिन्न अचेतन अवस्थामें पड़े हुए और म्पर्शे, रम, गंघ, वर्णको छिये हुए एक पुद्रलके समृह मात्रके देखता हूं. जिस समूहका स्पृष्टमे स्भूत सुमेर पर्वत सदश दुकड़ा अथवा मुक्त्मसे सूरम परमाणु समान अहा मेरे चद्रमाके स्वभावसे स र्वधा भिन्न हैं। जिस पड़ल समृहके किसी अहरण विभागकों में अ पनेही अज्ञानमें युण्य और पापके नाममें पुकारना था. वही विभाग अ.व. भेर ज्ञान-चद्रमांके निर्मेल प्रकाशोंमें एक नामसे और एक 🤡 पमे प्रतिभाषित होता है। मेरे चंद्रमाका विमान उक्तवल, निर्वाप भीर चिन्मूर्तिमयी है। उसकी कोई मी पुद्रक-समृहका विभाग महीन







निम हे तेम के सन्मुल अनंत कोटि सूर्य भी तिमिराच्छल भारते हैं। त्रिमकी शांत ज्योतिके सामने अनंत कोटि चन्द्र भी नक्षत्रकत् मंदर कान्ति प्रतिमापित होने हैं, निसरी निर्मेश्वा और शुद्धताईके समक्ष क्कटिकमणि, मलरहित जल और सर्वार्थसिद्ध विमानवामी अहमिद्रों है

शुक्त केदपायुक्त परिणाम भी सम्मिलित मालूम होने हैं। ऐसे शांत, मनोज्ञ, परमोत्कृष्ट प्रमुक्ते दर्शन प्रामक्तर आज यह संतृम है। गया 🞙 । दिगन्तर नैन मुद्रा उत्तमशमादि दशल्याण-वर्गरूप आमरणींसे मुशीपित, रसम्रय जरिन एकाशार शानका शुरुते रिरानित, शिव-रमगीरमणके रागका रक मुल-नन्धमे उद्यमिन, ज्ञान दर्शननिमेत्र क्छओंने दीनिमान शुद्ध येतात्वर मुदाक्त है। प्रशासित हो रही है। जिम मुद्राका मोही यह बतन्य भूगति अभेद बिन्तामें पढ़ ममुद्र-करोजन्त् आपरण कर रहा है । इसका दरव दर्यक्री अञ्चत आनन्द प्रदान कर रहा है । इमके स्वरूपेट हतने से अनंत कर्म-वर्गणाएं इसके निकट आती हैं, वरन्तु यह बरेपारे न प्राप्त हो आपे आत्मरूप उत्तम समा गुण्ने ग्रहीन है । अनंद अनुपन गुण्डीय न्यामी होतर भी मान-कपायरित, वर्यमार्टन अधिग्राम, जो कोई मति, निमे ही मुलकारी ही रहा है । अपनी सरकार्में तन्मय हैं। काररदित, परवानु बहरामें तिससी जाजीरमुणवारी, समता-तिहारी हो रहा है। मन्यम्बद्धान्दर्श, असन्दर्श-विश्वरी, वस्य राजार्थ सम्य-कार्यः विवितः, कियमन्द्रः-अवति, मृत्य-अविद्यति हो रहा है। " 



#### आगारी साघु ।

(९) सरापयाहित, स्वरुज्यानाक्टन्ती, स्वरपर्योद-प्रवाही, स्वरापता-नुरागी, सुपासबृह, आल्यासु आत्मज्यतताठे साधान् साधनेर्य उ-

म्मस हुआ, त्रिङोकको निम्मरण किये हुए मनोहर आत्मकानैक

मीतर रमन कर रहा है। में ज्ञाता, हष्टा सत्यस्वरूप हूं; में वर्ता मोक्ता नहीं हूं, स्वरूपानन्दी मेग इष्ट है । आरमसायुक्ती यही अदि-चत्र अद्धा, यही माद्र रचि, यही सचा छोत्र इस साधुका परमप्रिय मित्र सम्यादर्शन है। लक्ष्यश्ची शुद्धता लब्बक्ष परिणयनमे ही मान होती है, जिलेक प्रमु अभिनासी मिद्धारमा मेग ही वाम्तरिक हर-प है। पर इञ्चमय क्षेत्रमें भीत क्षत्रय उपादेय और अन्य क्षेय और हैंप हैं। यही संदाय, जिनेह, विश्रय रहित सचा शान मेग प्रिय स-होदर मन्यग्ज्ञान है । इंद्रिय और अक्टिय शिय वामनाओंने दु-रक्टी काम, कीच, छोम, मान, माया, शय, द्वेच आदि शिमानीमे विज्ञान, प्राधार, मामान्य शामनेदन झानमें तारीन, तथा परम प-वित्र भारम विशुद्धकर्मे सगन, लयमयावर्गही अग्न आवरम मेरा सङ्गुरु सम्यक् चारित्र है । हम रतनत्रय लब्दा परम धरेश मगी आत्ममानु प्रमुद्धित बदन अत्मात्रभावनाहे हेतु सर्व आत्माओंही म मार्ट्से उपस्थित हें। कोशरातमधी सिक्षिणी उत्तय क्षमास्त पर्म मुन्दर देशीक्षे उक्तमन्दकः समाजको एक सुग्रस्थानमें सिग्रनमान करम महेर मान व्यमुक्तम निर्मेत बहुत बद्धान की मिटानक



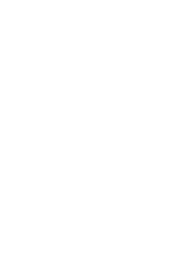
कहीं अनंत मुल है, कहीं शायक सम्यक्तव है तो कही परम पैप्पं है; कहीं निराकुछता है तो कहीं निराक्तकत्व है, कहीं बीतरायता है ती कहीं शिवनारिसे संयोगता है; कहीं अनंत राम है ती कही अनंत भोग है; कहीं इन्द्रिय-भार-वियोगता है ती कहीं अनीन्द्रिय-भाव-भगठता है; कहीं जगन् विस्मर्गत्य है ती हरी जगन् स्मरणल है, कहीं बिखेक्झना है ती कहीं विलेक-या-न्यत्व है, हहीं उत्तम दया है तो कहीं उत्तम ब्रह्म नर्थ है। कहीं उत्तम शीप हैती कहीं उत्तम आक्रियान्य है, कहीं परद्रव्य-रस-रिवना है वी कहीं स्टब्य-स-प्रवादिता है। इन गुणव्या झाटोंकी शोमा और मुन्दर मुग्टचोंको छेता हुआ यह अंतरारमा एक परम विलीम निमैठ भर्म-स्वानन्ती कुलकी छायाँगे विराजमान होता है। हा दुलेके उत्तम बादेव बली। अल्यन्त बोमल और मनोहर पत्रीका हरप इस अदगतमान्त्री झान चलुओं हो तुब ही तरावट कर रहा है। उत्तम मन्यकी मुगन्यित पत्रन इस बुलमें मेंट करके ज्यों २ इम अंतरात्माके मन्तित्वको लगती है स्पें २ इसके अंतरेगमें शिकला रविर निर्मेठ होता शाता है। मेद-विद्यानके बनोहर पुष्प निम समय बायुके मन्द्रामे दृश्कर हम अंतरात्माके उत्तर पदने हैं हमद्रा मारा श्रीर उमेंकी सुराक्ष्म महक जाता है। जब इस अंतरामाकी मुख-व्याम व्यानी है यह उसी समय हम वृक्षके बातुमस्यप इंग्लंड लेट केन है और उसके बदर मेरे हुए मुख-ममुद्दा पार-का अपने हुन और तुसको तुस काला है। इस सुरूपे अर्थ

क्षांत है। सम्बद्ध असर सम् अन्यान्याकी परम पुर काटा है।















र्या और पूत्र वेतित कर गष्टी है पूत्रे उत्कट जाकाशा है हि, मैं किर प्रत्यकाणका शाह यहां क्या गर्ह-सही मेरा परम मुगक्य उन्हें के अभी समानंत्र रहिणाना है, पूत्रे उस मार्गपर पठना है।

त्र नद युक्त स्थलपान नहीं, युक्ते अञ्चल स्थापीनमा नहीं हे तर ६५ १५ चन कि मैंन आधा परको पहिचान क्रिया १ वस्त्राच्या स्थल स्थल सामेपर मण्डलेका विकारण

ार तेन के का न्यामा शासमा निमुचा है। उसका अभिमान सन्दर्भ पर कियों नहीं बनाता है। तो अभिमानके साम अपने अने अपने शासमा करने हैं ने सम्पन्नव्यक्ति हैं । असमानक सामार्थ्य का आंख्यों कारते हैं।

३ - ८ अवनन्द्र अन्तर्ये इम शालमें काने हैं। ८८म ल्लु स्वयममा नाल्वेची व में स्पादित्युमानी-पुरुक्तरन जोल्या ज्यासकन् त्रास्त्रित समी म उस तथा गणा अस्मानास्पात्रमारिकारानिन सस्त्रः

हा प्राप्त के पार्टिक क्षेत्र के प्राप्त है हैं है जैसे क्षेत्रकार प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के क्षेत्र के क प्राप्त कार्य के क्षेत्र के क







स्वरूपनी दुरवार्ने गिवाय आनन्दके कभी कोई वरेश पानेका नहीं र्। धन्य है ये छःतपः ! इनग्री सहायनाः मुझे परम सन्तेशित और पुष्टकर रही है। बास्तवर्ने यह बाह्य तप ता ही कहलाने है योग हैं, क्येंकि महांतक संकल्प महित विचार है वहांतक निर्विद्यय छ-भनेदन द्वान नहीं । निर्मित्रका स्वयंदिन ज्ञान ही सारात् अंतर्गा मात है । परन्तु जबतर इस भावती श्राप्ति नहीं तबतर महो इन छ. बाह्य तर्रें से अस्य निरन्तर तपना बाईये । यद्यीप इनहा मंदीय मंत्रे निर्माम नहीं बनाता, मुझे गुणस्थानींगे अतीत नहीं रण सा, किन्तु मुझे पर् गुजरवानवर्गी स्वाहर सञ्चलन करायाचीही मानुके नाममें गुटिन स्मन्त है सो गान्य ही है। मेरेने इनना सीय है कि, मैं तीन होच-तिनयी शिव-तिवाहे राज्यमा पात्र । माम इनम काय है कि में स्वस्थान बन्न ध्यानशिय पुरुषेक वर्ष-बर्गणाओं है। दर्भ करें । देशेंमें इतना बात है कि में आनेगी। निद्व ममान मर्देश्वृष्ट कीरवरणा समझना व्हे । में इस मार्थि भागी वर्ष मान मामारिक अनम्पादी मूठ जन्ते हैं। बेरेने दन्ती माचा है कि मिद्ध और क्रीन करने अरोग नेने ग्रह महागी को कार्र रूप की मैं देखा ही बच्चा हुकि मैं साथ विश्व नवा बहुनको अन्यास का रहा हूं । देश बेसना कुछ है और अभाग रह र दर्ग वर्ग बाया है । इत बार बाल्यीश करी र राजे ज्या है। रहण कमा रूप बर्ची हेमा है। तर्राजे में मान नदम ५६ न अवर हा लागीवह और विकासिक साम्बर्दि गाने । महायां बन्दरायन्त्रता है लाई है।















वृतिसे मीक्तर आने स्वस्तमें धीन करना, यही इस बतका उपय है कि मैं दीनों गुफाणीये बाहर हो जाऊं और अपूर्व तेत्रसे प्रस्मित बनना हुआ दुन्दान्या रहूं। इस निधयका आगी उपयास सम्पर्टी अपनी अज़दि अधियाके वस क्वा अन्तानुक्षी कपायने का हो जाना है कि, उसी समय सम्पर्ट खदासे पनित हो पित्यान गुजान्यानमें आने छाना है। बस्पेस अधिकसे अधिक छ। आंक्से

(84)

( अपंच्यात समयोंकी एक आंकडी ) और कमतीसे कमती एक मनय टहरकर मामादन गुजस्थानमें रहतेयला कहलता है। निम ममय सम्यक्तमे निमकता है। इन्ह्री रिश्नीकी वह गह-छता मो सम्यक्तमें नहीं थी पैछ होने छगती है । वह गहछता अनंतातुरं री छोमके क्या हमी निध्यपने पटकने छमती है कि-विषय मुल ही मुल है, इक्डी अभि करना ही उपदिव है। इन इन्दिव सि-बोंची यहाल्या विक्रमें कमी मायाची भी। वेहा कर देती है, तिससे दह रिकार आने द्याता है हि परका निधामवात हो न परको हाति हो, हमद्रो ही पर-वंषकामे भीतिय-मुलाई प्रति कानी पारिये । बाद्य बने की सम्बन्ध गुणम्यानमें बीत माधवके लिये करना धा बही बद्धा बर्ने अब गायाचार-बार हो। जाता है। बानी अवस्तानुबरी मान-धी नेजन हो लही है। जिन बार प्रधार बरोंकी बस्पार्दी नहीं कर प्रकार देख का, उन्हीं महिने उत्मावता करने का माती है । अपनी जाने और बाने कुछके परिवर्डो निपार अधिपान करने क्राच है। आने बत्तरी क्रूट्र देशबद्दी बायुनी साने का करा है। कार्य बढ़ारों द्वारिये करिय काल कालमें सम्बे हम कार्य है।



फिर अपनी बस्तुको भूछा और सच्चे सुखके उपायसे विमुख हो अ पदोंमें तृप्त होता हुआ आकुछ व्याकुछ रहता है और स्वप्नें में स्वपदका रूपाल नहीं करता है। यद्यपि यह परमानंद स्वारी रसके स्वाद पानेके अनगरसे च्युत हो जाता है, परन्तु इसकी वृति अमादि घोरानुघोर मिच्याइष्टीकी अपेक्षा कुछ जुदी जातिकी रहते है। जिससे इसकी वृत्ति दूसरा अवसर कमी न कभी पाकर कि चौथी सीडीमें चड़कर परमानंद-स्वादको छेती है। यह निश्यय है कि यह जीवारमा चौधी सीडीमें चडेगा । यदि बहुतसे बहुत समय हमें तो उतने काटका आधा ही काठ खर्च होगा जितना काठ एव भीवको जगत्के समस्त पुद्रलोंको ग्रहण करते हुए बीत जाता है (अर्थात् अर्द्ध पुद्रलपरावर्तन) । बाम्तवर्मे यह पतन किया हुआ मिय्या-इप्टी मी सराहनीय है। तथा यह कभी न कमी श्रीसाधु अरहंत और सिद्ध अत्रस्थाको अवस्य प्राप्त करेगा । इस अवेशासे उसी तरह नमस्कार करनेके योज्य है जैसे हम श्री श्रेणिक रानाके जीव भवित्य प्रथम तीर्थकरको नमस्कार करते हैं। इस मन्यात्माने

यने अपूर्व प्रकाशसे गिरकर ऐसे घोर अंधकारमें आनाता है वि

श्री सहित्य प्रथम तिर्भिकरको नमस्कार करते हैं। इस मन्यास्पर्य एक दके शिवमदिरको सांची कर ही है। वही आकर्षता इसके किर अपनी और बुजाएगी, अक्टरय बुजाएगी और अन प्रमन्ते शिवम्य बना देगी। हम इस समय इम विश्वकर्म विरामित समस् सासादन गुणस्थानकी नीतिको निक्षयमे सिद्धारमा अनुभन्तर उनके स्वयो अन्तिम नोहते हैं और ममन इन्दियासीन मुसामासीमें रिक्कण इस्स कार्यन अनुभवानन्दका न्यद हेने हैं।











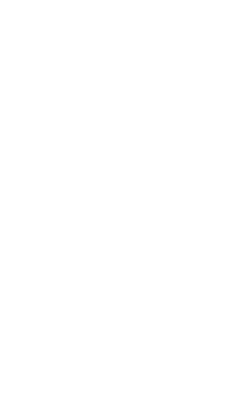




## श्रावकका मोक्ष~महलमें प्रवेश I

( 37 )

आनन्द-प्रदासिनी, साथ-मन-मोहन रूप-चारिणी, अप्रमाण राज-कला-स्टामिनी, अद्भुत स्वयता नारिके क्यमें मोटिन हो एक मीवामा द्यमदे शांत सगतर और सुगुण उपनमिश्त दम गाने महण-के द्वारपर आवर उस नारिये मिलनेकी गुन्द हरिके बारण उच्छ-इति हो रहा है। वह पत्म प्राणप्यापि हम लने महल्ली शिमारप निगरित है। मो कोई साहमकर महत्रहे उत्तर तक बर आ सका है, वही इस मारिने सम्मित्तनका खाम उत्ता सकत है । यह मोदी शिक-नरिने भाराक-विन सामारिक वर्षे वंदेशीको हेव नानता **हमा** तया अपनी परिकरिनी वैराम्बाध बालिको विम्तारता हुआ इम महान बर बदनेही मात्रल करके अवना पर अवो बहाना है । इस मद-सके लग बन्द विकट और यसाद बने हैं। तियहे शामनेये अप-स्यानवानावरम् बायाय अपने मठीः भद्रतेषे असमर्थ ही जाते हैं। बारी हम सम्प्रदे बमाँद स्टार्म जामच्या है । इस सम्प्रदे प्रपृदे सर्वादे श्री साम है। यह भारतान्द्र इस क्रम क्रमणे चारेन्द्रा करागान करना है। दमाय-अन्तिका करी करी बहुत क्षेत्र है, करी करी यह महत्त इस र विकारित तम कोता है । प्रति प्रति गरि गरि राज है। जा जा रिपर्कान्य प्रियंत्री संपानी साथ साम है को न्द्र न्य प्रकार का गाँव कारत प्रदान करते हारी है। बर्गपुत्रमुक रूप पार कारमास्य अस्तर्ग होता केन राय अर-











राज्य के क्रिक्ट कुण देन स्थाप अद्यास्त्र की क्रिक्ट क्रिक्ट के अपने की क्रिक्ट क्रिक्ट के अपने के क्रिक्ट के क्रिक के क्रिक्ट के क्रिक के क्रिक के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक्ट के क्रिक के के क्रिक के

अन्य हरता है उप प्रविक्षण समाप्ति

 अन्य हरता है उप प्रविक्षण स्वा

 अन्य हरता है उप
 अन्य व्यक्ति है ।
 अन्य वर्गी पाइड वर्ग विद्यान है ।

ন্দাৰণৰী নায়ুৱ ৰজ্ঞ বিষয়েৰে है। বেছ জায়াৰ ট্ৰিনেণ্ড বছ সংগ্ৰেষ অহা দ্ৰুন্দা বিবৰ আগজী বিহুম্ব চাই কেল্পী

र व अप्यास्त्रक्री व व स्थापी व सम्बद्धि

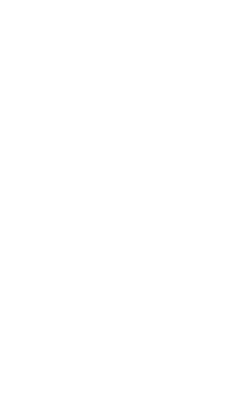
10 km 2

a serie g

en de











- 1 114 4 4 4 6 6 4 4 1 1 5 7 4 1 4 1 5 7 1 8 A a creation and the contraction of the contraction o \* 11 1-111 1 2" The second second and a second second second र तके दे क्या और जानवास संदर्भ राज्य 🗡 र म का प्रीति होता है। अस्य समय 🗥 ः क्रान वर्मान अन्यन्त इस्ट एकेट बीर ए । रानी · । १ वर्ग नरस्याया दक्षम मेकड्र अनल स्व वर्गा है। ००० - १ १ १३ वस्त दार्गक और बनहरण परमा-दर भ । । । भ र इस्त इस स्था व्यापनार निष्ठ करे हैं हम कर है जा बक्या में व करियन है। यन है द राय म । ० ० भारत थी.म असाव दिन हैं। द्वारी बारत काम है। का नर्जन रहत हो। भवनी इस घरिति है। रम अन्यान दिए जिलाह हर होते. राष्ट्रमाहे बाल पुत्रम पूर्ण सुनी सुनी क क्यूनी क्ष्म वहत का आक्ष्मानाहि आहें पाने शिव च्यो दे द्वार प्रमान कर्य हिन्द अधिनदी। असूनेशानेद्वार स्वाद B4 3 5







, र १ । १८३ विश्वहमन्यक्षे **ह**स्तनापूर रमगठ उन हर होनेवाले हैं। . १२५ तपन एक अनम्हने मात्रके रामार समाप्त देगी। . १२ इपर धर्नाक अहत .. . र अग्रामा है और . स्टब्स हन्दर्भ वासकी ८० ५ जिल्ला . . . ई अनन काल ...हे के रहा पा**क**र ार होये श्रेष्ठ तः अधिकारी. 1 1 14's FA.

, 70

व्यास्ति क्षेत्र प्रमृति वना गरी है। इसके मीर्ट्य के प्राप्त प्रमुख प्रमुख क्षेत्र काश्रय क्षेत्रके











और निविकल्य ममाविके आमनमें नाकर करोल करना चाहिये।

जय निर्मात आगनमें नाना प्रकार नयोंके विकल्परूप-काटे व कंकड नहीं है, नयोकी पनका अभाव है और न वहा गुणस्थानरूप अब नीवपना है। स्थर निमल आवनमें ही समज करना मेरा हित है। इस नवानमें कोने हे न्यानभीत मेरी प्रिया **मेरी निवाद आ जाती है,** - मन मर निम नमेर प्रकार समापण और परस्पर प्रीतिका प्रादु-भाग महाना अनुसार अध्यक्त है। उस वरमा सामाधिकर्में मेरा र = शर्यर र स्थार व "येत्रविका पृत्र-स्थ**र ही हुआ मानी सकलता** हा या । ज्या । अधिकार हे परन्तु भित्र २ ही रहते हैं भाग भीत र ह रहता हूँ मेरा स्वक्ष बास्तवमें अध्यानाथ है। या र जिले कहा तीज आग मन्द्र भादर, ताल आहे **मन्द्र गत्य, तील** रे आर मन्द्र स्म. तीत्र और भन्द्र स्पन्न, तथा भागे व हल्के पुरूष म्बत्य सब हैं' केरे चानने अपने स्वामाविक वि**यक्त विधे हुए च**छे ुआरेव वयदि संरेच र रोम कहा विश्व नहीं ज्याना, **कोई मदीनता** मही अता के जनमानट सार होता। यह मेरी अन्भृतिका ही प्रताप ह के जिल्लामण १० एक बाव देनेको आहे. परस्तु मैं स्वभाव : ११९ ० ५०१ । १३ अस्वयं भेरी ज्ञान-दृष्टी ५०० ' व रचनर \_ न कथा, अवसेरे अत-रंगक सन्दर्भ १९७९ । वस्तुन्यान्तका १९९१ स्वकारण द्वार १ त. १९७९ । वस्तुन्यानका १९९१ स्वकारण केमा १०

### बीर पुत्र ।

(33)

शामधनक प्रीवेदान भाषाचा सन्तरी विक निरम्पन अवशेषन अने साम प्रशासि प्राप्त कारणके प्राप्त हो सहाई। यह प्रार्ट क क्षाय परिवासीने सम्बंद दिनोध-सप होका भेट-देरीके ध्योका किएम का रहा है हैंग मन्त्रेहर अस्टि अहा रहा दर मोत-ग्रहाचे रेतः बार करवार्थिक कहा है जिसे भी बार बादिय हैं। है। हर वर्ष काराये राज्य विवेद काराये क्यों है। हार इसदार शेल इसदे जातून जिला अहर दि होता है। यह समय अपूर्णमाई चर्द राज्यमा और एवं इस एवं है साम एक्ट हो सह है का उन किए अपएक इक हैरपूर राज्य है अर र अर दिल के राष्ट्र की काल है। उन राजा कर क्षेत्र क्षेत्र कर है है है है है है है है है बेर एक इस सम्बद्धा १५ इस अस्पर्यक्त Emmerson of a state of a ಕ್ಷಣ್ಯ ಜ್ಯಾತಿ ಇರುವ *ಕ* Private comma co en ?



प्राप्तकर चिनाय ज्योतिके दर्शनमें छुमाय हुज क्यून्यक्ता हेकर संतोपित हो अपनेकी मुखी अनुसद का का है

#### आत्मीक रेटगाईं। (३१)

प्रमात-तल-देशी स्था बनुद्धा हेन्द्र न्ह्य क्ष्मिक्ष रहता है । सम्पन्दछी और अपने अन्<del>य क्रान्ट्रिक्ट्रे स</del>्टिन् भी अपनेमें नहीं होने देना है कि मैं क्लि है कि सन्तमात उमके अनुभव गोवर है। 🔫 🔊 बीतका बीतलभाव समर्थ रहीके समृत्य है 😩 🛫 आतम्बन ही हम निगतमंत्रे लियं स्टेब्क्ट है स्तारतस्यन निधय निगणस्यनकः सङ्ग्रहे हुन् हुन् मास ममाधिमें ममाधान रहतर मन्स्यक्ष्य 🖘 . भाषु नामानाः । साम्यतानाः सार्वः नित्ते हैं। इत्तर्शः सम्यक्त्राः १००० स्थान है। निसंदेश प्रयोग सम्बन्ध । विस्त The same and great her as here were the same and the same पान सम्मानित सामा साह तरह तम 😄 💆 🤝 क्षेत्र प्रस्त रहते हैं। उसके अन्त केंद्र and the second of the second o मर्ग में पर वस महारेष्ट्र प्रोप्त करते हैं। मिक्त सम्बद्धाः सम्बद्धाः भिन्ना केर किया निकार कि<sub>न्नी क</sub>ु



न्नेत प्रस्थालयः रोकानेरः, (राजपुनानाः,।

## तत्त्वरूपी अंजन ।

( ३९ )

आत्माराम अभिराम केवलघाम स्वकल्याणके सन्मुख हो सर्व अ-पने उन वैरियोंसे मुंह मोड़ रहा है, जिनको कि थोड़ी देर पहले अ-पना मित्र समझ रहा या । अनादिकी भूल मिटाके अब यह स्वपथ-का अवलम्त्री हुआ है । इसने अपनी सब उन्मत्तता वहा डाली है तथा शम दम और यमसे परम शांत, विवेकी और स्वआचारवान बन गया है। जिनेन्द्र कांपेत स्याद्वादरूप परमागम द्वारा प्रदर्शित तस्वरूपी अंजनको लगाकर अब इसने अपनी मिय्यादृष्टिको सन्यग्दृष्टि कर दिया है। मोक्ष-मार्गमें साधक और वाधक ऐसे दोनों प्रकारके तत्त्वीका सत्य स्वरूप इसने पहिचान हिया है । इसके अंतरंगेंमें भव-रुचि टूट गई, इन्द्रिय-मुखोंकी तृष्णा विवट गई तथा कपायोंकी प्र-मरना मिमट गई है। यह अब अपने रूपको देख चुका है। इसने अपनी गप्त निधिको पहिचान लिया है। अब यह सर्व परका कर्ना चकाकार अपने ही मत बनमें अपनी ही नगरोमें, अपनी ही निधिके हार स्थापर वरना बाहता है। मील-मुखका तिपासु हो। अनीन्द्रिय ग्राममें पहचना है इसका सम्बन्ध है , बेलगगतकः मुहाबना भीत-न हं इसके प्रिय है। यह अन्तरम नर्पन शुद्ध स्वरूपकी ओर . इस्तत २ अयाना नहीं है। इष्टि निबेल हैं, इसमे बहुत देर नक एकमा देख नहीं मकता। यद्यीय दहर २ तर पुन. २ अवलोकन करता है तथापि एकत्वप अवस्थाको न होनेसे किंविन् आकुलिन रहता है। परन्तु इसका करन्वार देखना इसकी ज्योतिकी शक्तिकी



कर दिस पताचार्क द्वार-इटिने रोज्यनन होते हैं उसी पराजाहे पर परेहर भेरत अस्तर हो अस्टेश्न कर तुत रहते हैं, दे ही मुझ<del>-सन</del>ूह चंद्रमको अनुसन कारको पाका नामृ-टक रान बाते हैं। ऐने मुख्यतुद विन्तय राज ठाउँ निव निकित समाप्ति का अरोहम करते हैं, दब दीन होन्ही कारीते एपछ देश और खपं एकको अनुसन्धा सप ही परमासा हैं-देना सन्यत् विचर करते हैं। यह विचर उनकी संगर काननी ह्या हो भी विराहत्का उत्तरने हे बाब है। वहां अस्तरहर हर बृहाँके देखा हम उनके देखन-रूप मानक्स प्राप्तकर अविधाय कृत होटा हुना सन्यक् हगान्या समरम-सरीवर्से निमानन होता है और बिर बिरानित कर्न कविनाको मेहकान महुनेते होता हुना असे अंतर्नुत इसतको प्रतृष्ठित इसता है वया पर पवित्रका मलका हैता काल्हाद करका है कि पानी में लये-तिद्र, तिरंतन, तिरावर, कान्तुन और मुख-घरावर हूं । पह बाल्य इस टक्कारीके बाल-टक्के ड्रांटे देहा है और यह दीव अपने बहुदने केन हदाला आप-पुछ ही अपने समादि राष्ट्रमेंने हहत है और प्रत्येक बेटने उनकी राक्तिको हीनकर वित्यास्त्रम् अनुभवानंद्रका स्वव हेता है।

## आन्मीक हलवाई ।

निजनसम्बद्धाः स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य हेरः स्थानस्य स्थितस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस



काल जिस परमात्माकी कान-दृष्टिमें योगायनान होते हैं जसी परमात्मके परम मनोहर मंगड आननद्य जो आइडोकन कर तृत रहते हैं, वे ही मुधा-समृह चंद्रमार्क अनुपम कलको पाकर म्याम-तका पान करते हैं। ऐसे मुख्यमुद्र चिन्नय परम तपसी निज निर्देशका समाधिने जब आरोहण करते हैं, तब तीन ह्येशकी जानेते प्रथक् देव और खयं एककी अनुमक्कर खयं ही परमात्ना हैं-ऐसा सन्यक् दिवार करते हैं । यह विवार उनके संसार करननसे ह्य हरे भरे विकालहादरूप उपवनमें हे जाता है। जहां अनन्तगुन रूप वृत्तें हो देखता हुआ उनकी वैरान्य-रूप मुगन्यकी प्राप्तकर अतिशय दृत होता हुआ सन्यक् हगाला सनरम-सरोक्स्में निमञ्जन होता है और बिर बिराजित कर्न कारिमाको भेद-झान साबुनते घोता हुआ अपने अंदर्नुत कनक्त्री प्रकृष्टित करता है तथा परम पवित्रता प्राप्तकर ऐसा आल्हाद करता है कि मानी में खर्फ-तिहर, निरंतन. निराकर, ज्ञानपुंत और मुख-धाराधर हूं **।** यह आल्हाद इम नत्त्वज्ञानीके आत्म-तनकरे पुष्टि देता है और यह कीव अपने बहुतने रोग हद्यकर अन्य-पृष्ठ हो अपने समादि शतुओंने लडन है और प्रत्येक नेटमें उनकी शक्तिको हीनकर विजयानस्टबर अनुभवा**नंद**क न्याद केता है ।

#### आत्मीक हलवाई।

Ę.,

तेत्रसम्बद्धमन्दर्वः, यस्य स्वयत्त्र अहतः, स्ववित्रम् हेव अस्यामी, मिद्रमृत-दर्शनकानी आत्र सम्पूर्वे स्व-मृतियोमे एदम्म हो दिव-



ज्ञानावरणी, दर्रानावरणी, अंतराय कर्मीका नाशकर, स्वामाविक मुखको पाकर तथा शिवरमणीले संभाषण कर जीवन्मुक्त हो अनुभ-चानन्द्वय अनुपन स्वाद छेता है।

#### निजगुण गणना।

( ३८ )

परम पुरुपार्थभारी, दिव-विहारी, ज्ञानानन्द्-रस-संचारी, सन्यन्दृष्टी आत्मा जब अरने आत्मीक धनकी गणना करता है तब गणना करते करते कभी भी अंतको प्राप्त नहीं होता। अपनी राक्तिकी हीन प्रगटताके कारण भोटीमी ही गणना करके थक जाता है और आराम छेनेके हिये अपने हाम गुणोंने अन्य अनेक हाम भावीकी गणनामें छग-जाता है, परन्तु ऐसा करते हुए भी इसको अपने आसीक वनकी गणनाक्य स्थात स्टात नहीं। इस कारण तुरंत ही निज शक्तियो सम्हार निज धनकी यानामें सक्तीन हो जाना है। यही जान मक्तान-के शंत का देती है और असी प्रत्येक समोहन्से शांत कर देती है और असे प्रत्येश समीतनी इस दारी जानारी स्वपृत-सारी एक ब्राप्तरात कार्त है जिस ब्रेक्ट स्पद् हे यह स्वस्पदी रूपरी बुरेडे जिये कि इत्सूब ही हान है <del>हीने समार करते</del> वह हुँ अर्थित संस्थित हाते. उनेसे की हुए एक किन्दुरी बातहर रुमरी अदाने केर मेह केला रहता है और आवश्यासन अलार-हे सुद्धे रेगरेने हैं। इस बन के नहीं दिस्सा है। इसे गहरू करता है, परन्तु यह सम्यक् पुरुषार्थी है, इससे भात्र आशा ही करके चुप नहीं हो जाता है। इसकी रूपि इसको शीध ही स्वस्वेद-सहग्र अनुषर कराठी है। त्रिलेकके षर्द्वन्ययय पदार्थीको सम्यक् ध्रद्वातमें रक्षनेकला यह सुधी जन सम्पूर्ण पदार्थीम किसी ठाइका

मी सासारिक राग और ह्रेय नहीं करता है, कि जिन परार्थी को निष्याहृष्टी सम्बन्ध करके अपने मान देता है तथा मनको प्यारे पश्यों में
राग और अमुहृद्दाने पदार्थीमें हेण करता है। यथाये वेदी ही वास्तर्भे
आस्मद्रानी और मुस्तद्र है। वही चीरता निस्तानता की स्मान्द्र साम उपसन्द्र है। वही चीर अस्पर्दे
आस्मद्रानी और मुस्तद्र है। वही पराय अस्पर्दे
आस्मद्रानी और मुस्तद्र हिंग्डेक मन-समृद्दे समुद्र हाजानन्द्र
नाम तृत्य करके उसी तरह अपने मोस-गानो रिहाता है, जिस
तरह रून अम्मद्रन के समय थीतीय हर प्रमु और उनके मात
निपाक सम्मुप्त आहर आनंद नाटक हरके आनन्द करता है।
यह मनयमारका नाटक परायुक्त अन्द्र तिसा करते हुए भी मोस
मंत्रदेम परायुक्त महत्ता है। यह सन्द विश्व हुए भी मोस

अनंत गुण पर्यायकारी आत्माका स्वरूप स्याद्वादके द्वारा सम्यक् निभय कर नो कोई नीरात्मा स्वास्थ सम्यक्षी उन्तर्धन होकर विषय नुष्पार्थीन हटना है और पुन पुन शुद्धात्मानुभक्को भवनाकरता है। नहीं नंत्र स्वत्मानुभक्ष कर्षके अनुभवानस्वका स्वाद छता है।

## न कर्ता हूं न भोका हूं।

(३९)

में बंघा हूं व खुड़ा, में संसारी हूं व सिद्ध, में क्रियावान हूं व अक्रिय, में सरागी हूं व बीतरागी, मैं मूद हूं व चतुर, में टुए हूं व सजन, में कर्त्ती हूं व अकर्त्ता, में भोका हूं व अभोक्ता, में सूक्त हूं व स्पूल, मैं अनेक हूं व एक, मैं नोबी हूं व शान्त, मैं नित्य हूं व अनित्य, में दृश्य हूं व अदृश्य, में आगमज्ञ हूं व स्वभावज्ञ, में लोभी हूं व संतोषी, में जन्मा हूं व अजन्मा, में मुखी हूं व दुर्खी, में वर्णवान हूं व अवर्णवान इत्यादि अनेक वचनके जालोंको इन्द्रनालकासा फैलाव समझकर नी कोई उन्हें दूर करता है और इन विकल्प-जालोंसे अतीत निनरसमय साक्षात् स्वभावमें स्कुरायमान ज्ञान ज्योतिको ही ब्रहणकर सम्पूर्ण टोकाटोकके पदार्थीके सम्यक् कारण और कार्यका ज्ञाता होता हुआ अपनी शुद्ध चैतन्यमयी जातिसे ही नाना करना है और उनसे खरस-वेदनका आनन्द पर-स्पर छेना देना है वहीं आत्मा नत्त्वज्ञानी और आसन्न-भस्य है। यही स्वभाव-में। जी अपनी उपयोग परिणतिरूपी मलको त्रिलेक-बनमें ममेटकर अपने स्वरूपके ज्ञानमई नीचे खाड़ेमें भरकर अटट अमनक भडारका धनी होता है और उस धनके सुखमय मद्रेमें एमा उन्मत्त हो जाता है कि रच मात्र भी अन्यकी परवाह नहीं करता। एक निज अनुभूतिका ही प्याग रहता है और उसीमें र्गत करता है। हद मन्यक्तकी अवल महिमा उसके स्वरूपमें



विस्तामें तहीन होकर यह अंतरात्मा बीतराग-विज्ञानी रहकर तथा द्विव-तियाके मोहमें रित करके निरंतर अनुभवानंदका म्याद लेता है।

# गतिमार्गणामें में ही हूं।

(80)

त्रिलेकका स्वामी, शिव-रमनीका वर, आत्मीक अनंत गुणरूप धनका धनी वास्तवमें में ही तो हूं। मेरा अनंतज्ञान, अनंतद्शीन, अनंतमुख, अनंतवीर्च्य मेरे ही में हैं। मेरे निवासका न्यान मेरे ही आत्माका असंस्यात प्रदेशमधी चैतन्य नगर है।में गतिमार्गणासे भिन्न हूं । मुझे कोई चारों गतियोंके स्वांगोंने दंदा चाहे तो में कहीं भी नहीं निल सका हूं। इन गतियोंका हेतु, स्वरूप, कार्च्य, और फल समस्त ही मेरी निर्मेल शुद्ध परिणतिसे विपरीत है । अहमिन्द्र, इन्द्र तथा सुर अमुर सर्व ही निज स्वभावसे भित्न पर पुद्रल कर्मरूपी वर्गणाओं के निमित्तसे करने २ रूप. पद. कार्च्य और म्यानमें स्वसीन हैं । उनकी सारी कीडा, उनका मारा अमरा, उनकी मारी धर्मीकिया मेरी शास परिजामिक क्रियामे सर्वेश विराह है। चक्रवरी बसभद्र, नरायण, प्रतिमारायाः कामेरेर अदि भने हो तर अपने १ पृत्रमें है अहकारमें अध्यक्त गाँउ कि तर हाथा ते हामसे के स्था भाव भावेसेसे समझी ही चिल्ला करते हा है। कि लाजिक निधाननारे पराह्ममा है। अग्रापर मिंह एक अर्थ स्था सहसम्बद्धि धनका क्याचा, कलका क्या ममल ही होन्द्रियादि विकल्पय व सर्वे जन, अप्नी कया, प्रत्येक वनम्बन, नथ संघरत स्रोडगई अदि प्राप्तारेयोंके हुरेत और



त्रिहोकाहोक झाता परमात्नाके दर्शनसे विमुख रह उत्कृष्टतया स्परीने योन्य पदार्थोंको ६४०० धनुष दूर क्षेत्रसे, रस हेने योन्य पदार्थीको ५१२ धनुष दूर क्षेत्रक्षे, मुंबने योत्य पदार्थीको ४०० धनुष दूर क्षेत्रते, देखने योन्य पदार्थोंको ५९०८ योजन दूर क्षेत्रते तथा मुनने योग्य पदार्थीको ८०० धनुष दृर क्षेत्रसे जान मृद्धित हुद्धिकर उनके रागमें तन्मय रहते हुए स्वरस-स्वादका साम नहीं करते हैं। परन्तु पंचेन्द्री जीव मनका घारी होकर भी अर्थान् उत्हार तीर्यकर चक्रवर्ती जीव होकर भी तथा स्पर्शने योग्य, स्वादने योग्य, और सुंबने योन्य पदार्थीको नी नी योजन दूर क्षेत्रसे तथा देखने योज्य पदार्थीको ४७२६३ ई योजन दूर क्षेत्रसे , तथा सुनने योज्य पदार्थीको १२ योजन दूर क्षेत्रसे मालूम करके भी तृप्त नहीं होते आर अपने मनमें इस बातकी ईपी करते हैं कि श्रीआहंत सिद्धपर-मात्माके सददा हमारेमें ऐमी राक्ति क्यों नहीं पैदा हो जाती है ! निसमे हम तीन होकके ममस्त पदार्थों को एक ही समयमें विना इन्द्रियों-की सहायताके ही उनके समन्त विषयोंसहित नान हैवें और इस कारण आकुळताओंके प्रवचींने दूर नहीं होते । वान्तवर्मे अयोगशम ज्ञान और संयोजदाम वीर्यक्त गन्य कहा तक हो ! पुद्रलके विका-रीका मन्बन्ध आत्मको विकारी बनाना है। ऐसे मन्बन्धका मोह ही आसाके परार्थन इ.कि. गरी. देखें जार अकुलित काता है।



निस कायमार्गणार्ने अमते हुए एकेन्द्री-पृथ्वी, नल, तेन, वायु-कायिक जीव कमसे मसूर व चनेके सहश गोलकर, जल-विन्दु सदरा गोल, सूची (सुई) सदरा कर्द्ध बहुनुल, ध्वना सदश चीकोर आकारवाले सर्व ही उत्क्रष्ट व अधन्य धनांगुलके असंस्थात भागमात्र अवगाहनाको घेरे हुए निगोदरहित ऐसे अहस्य शरी-रको रक्ते हुए कि जबतक इनके बहुतसे दारीरका समूह न मिले तवतक इन्द्रिय-गोचर न हों, मूर्च्छित रहते हुए जड़मई बने रहते हैं; उस कायमार्गणामें उस अनुमर्गका गमन नहीं होता। भिप्त एक जीव वाली प्रत्येक अप्रतिष्टित व अनेक बादर निगोद्मीव -आश्रित सप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति जवन्य घनांगुरुका असंख्या-तवां भाग वाही तथा उत्कृष्ट १००० योजन ( छोटा ) हंबी, एक योजन चौडी गोल कमलकी कायमें पढ़े हुए संसारी जीव छेड़न भेदन आदिके दुःख सहते हुए आकुलित रहते हैं, उस कायके मोहर्ने आत्मानंदीका पतन नहीं होताः दो इन्द्री जीव जबन्य घनां-गुलका संख्यातवां भाग अनुंधरीकी व उत्कृष्ट १२ योजन संबी संसकी पर्यायमें; ते इन्द्री नीव नवन्य कुंध हो अनुंधरीते संख्यात गुणी व उत्कृष्ट क्रीप्मकालमें वस तीव हो ३ कोम लन्दी कायामें, चौइन्डी नघन्य काणममक्ती हो कुंधुसे संख्यात गुणी व उत्क्रप्ट एक योजन लम्बी अमरकी कायानें. पचेन्द्री जवन्य निजयक मत्स्य हो काणमनक्तीमें मख्यात गुणी व उत्ह्या तीन पल्यके शरीरमें पैदा हो शर्गर-मोही रह मिध्यादर्शनके कारण मुछी और वियोगसे दुःख पाने हैं. परम्तु हर्ष है कि स्वान्म अवडोकी सस्यन्दष्टीको इस



किल्सेस अङग रहता है। वास्तवर्भे यह शरीर पुट्टटकी वर्गणा-तिसे ही उत्पन्न हैं। जिस पुदृष्टमें सार्श, रस, गंध, वर्णके २० गुण व गुण जात्माने कोई भी नहीं हैं, न यह क्षत्री, बाक्षण, वैरय दि है । यह सब नाम शरीर ही के हैं, आत्माके नहीं । निप्त शरीरका निरन्तर पुरण गलन स्वभाव है, वो भीतर मलनूव आदिसे भरा है, जो स्वयं अपवित्र और जो इसका सार्श करे उसकी अपवि-त्र करनेवाला है; ऐसे वनमें निस्तृह हो जो जैवन्य वनकी पवित्र-तामें तन्नय रहता है, अकायी रहकर स्वसमयके स्वादमें मन्न रहता है, ऐसे अनुभवाको अहमिन्द्रोंका वैक्रियक दारीर भी भिन्न ही प्रतीत होता है और वह तीन कालनें भी ऐसे वनकी कामना नहीं करता। जब जड़ तन ही मिल है तब तनके सम्बन्धी माता, पिता, माई, बन्धु, पुत्र, स्त्री, पुत्री, धन, धन्य, क्षेत्र, महल, आदि सर्व ही आत्म-स्वरूपसे प्रथक् हैं। जो मोही इनके मोहमें पड़ अपने स्वरूपको मु-हाता है-वह अपना ही शत्रु, दोही और अपना ही अक्रस्याण करने-वाला है । निम रस-रितयाको कोई पर रसके खादकी चिन्ता नहीं होती-वह रामक स्वमबंदन ज्ञान. अनट. गुणवान् . भवद्यि-तारण-यानगर आख्द हो समय २ विशुद्ध सर्वोमे बदता जाता है, और अपने मुख्य स्वत्येमें लबसेन रह दीव-नारेके मेहनेबके अञ्चन अकर्षणी प्रवेशका अधिक बलेबे अनेत या समा स्वस्य अनुभवानन्द्रकः व्यन कान है

## वेदमार्गणाकी आकुलता ।

द्यारी सम उज्ज्वल मुणपारी, अविकारी, अस्यस्त निरुट मन्न गीव कुनुद विस्तारी, अझान-निरीय-तम-हारी, मन्नावाप-संतम, सर्न-द्यानकारी, परवन्नु आधारराहित निराधार परिणति आकारा विद्यां, अनन गुणरुला भंदारी, परवारमा सदया अंतरात्मा आन सन्पूर्व प्रिवेदहरू तांत्र मक्कानाचे रहित हो वेद्राहित मुक्त-तियांके स्पर्ण णर्मे दलित हो रहा है और अपनेको मंसार्त्म रहते हुए भी संग-रादम्याने पुण्य, मान रहा है, निम्म वेद्रागिणम्म अमण करते वर्ष अझानी औव अपना समार बनाना है, जस वेदके विचारको अब हैंग निर्वाहित किया जाता है नव ब्वन क्यान ही अन्तरात्माका प्रा

मोश-मार्गमें बहुना पण्य माता है। जिम पुरूष वेदकी तीवताने ब्रिसंदी राषुपारी विष्मा कर नार्दमार दिया। व ब्याव्हां कर सारिवहरूक स्पर्मा पिन्ट विदय क्षेष्ट कमा नार्द वहुबाया। व दुःसाराम्बर्मा १० करा हुमारी थाम बनाया। तथा सिम पुरूष देदके होहें मारी तन श्रीमें सुकुद हो निज-सील्यन्तको मधीन करते हैं।

नारी तन श्रीमें लुख्य हो निज—शील्प्रस्तको मणीन करते हैं, गुरुष पेटमो निज आरि आज जी त्यायने और अमन्य≪पर्मे स्वत रो-वे मध्य अनगतमा आसम्य और अम्रचारी हैं। तिम स्त्री

्रा उत्तर में अनिम्सी श्रीमा आर्थ अभ्योत है। जिस खा द्वी उत्तर में चन्द्रनमात्रा मन एकाएक पुत्र श्रीमो हैरा उसे असामचन्द्र महत्त्रमात्र सपसे कुठव करा असम्बद्धाः स्तर

ब्रोधित करण कि उसका यही ब्रोब एक पहने, राजमस्वदारे अय होने नथा आसंस्थात होनेका कारण हुआ व निस खीवेदकी तीवतासे चम्पापुरकी रानीने श्रीमुद्दीन सेउ ऐसे शीख्यान्को शूटीपर निटवाया व जिस बेर्के तीत्र मोहर्ने पड छी-समान कामवेदनासे आकुछ हो। निन निजानन्द अविनाशी शिवनायके मोहसे छुटी रह सांसारिक पुरुपेंकी इच्छा कर नई, तिर्यंच योनि वास करती हैं, उस खीवेदको हेय समप्र जो जीशत्मा त्याग करते हैं वे ही निर्वेद अवस्था प्राप्तकर स्मात्म सरक्षमें मगन होते हैं। जिस नपुंसक वेदमें पढ़े नारकी, नर और विर्पय कामकी तीव ज्वालामे दन्यायमान होते हुए सन्यग्दाधिका ष्टाम न कर आत्मस्यरूपको नहीं पहिचानते उस खंड वेदको सर्वेपा हैय समग्र अंतरात्मा आंतरिक मनोहर वृत्तिका अवस्मन से मुग्निया स्पभाव घारण करते हैं । जो इस द्यारार, दारारके अपया और इन्द्री क्षिप रागद्वेपदि क्याय-रन मर्वको अस्न स्वरूपसे पृषक् नानते, मानते और अनुभव करते हैं, वे जीव भवकरणे निराकुलवाहारी मुखेंसे अडीड भग्हारी निगकुल्डाकारी अनुभवानंदका सुवानप रम पी अत्यान तृप्त ग्रह कृतकृत्यका अन्यर और विगन्नरानेकी। महस्यतः प्रगट करते हैं।

#### क्षायोंकी वंचकता।

8

प्रमान सम्बद्ध-विकारी यामात्र जामनः अभिनारं हाम क्योन मुख्येष्यका प्रकारी यत्रनामणीति स्वयम्य मानेका स्वयोजन सम्बद्धीय सम्बद्धार्थित नामे रोमासिनन उत्पन्नाम्



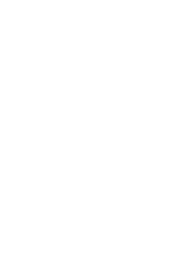
निस अंतर्मुहूर्त बाट तक रखते हैं, उससे संख्यात २ गुना अधिक न्दल तक जनते माया, मान तथा क्येषका अनुभव करते तथा देव क्रोबक्ते विस अंजर्नुहुर्व तक मोगवे, उससे संख्यात २ गुणा काल दक करते मान, माया और लेमको घारण करते हैं। क्तैर मनुष्य निर्देच किस अंतर्नुहुर्व करल तक होम क्यायको रखंदे हैं, उसते संख्यात र गुन्त बाल वक कमसे मापा, क्रोब धीर मानके हमझेंको सहन करते हैं । बालवर्ने चार गतिने इसर गना प्रसारके सुखडुआ हम यहमीको पैदा करनेवादा इस इंसरी वैद्यक बाहर-भूत्य क्याप ही है । यही बन्धरूप तेत्रको देवार करता और निष्यादर्शन रूप जीवके संक्लेश परि-गानका बीतको बीता है. जिसके कभी कडुने कभी मीठे पछ मेर २ यह नीव मीडे फरोंके दोमों काला करता है, परन्तु बहुदर्भ सहस्र भेज प्रदेशे न राहर हुए परने मुख कर्स सहित्व हेता है और संवदलाई वरह निकाप भारते रवित राज्य भवसी सुरस्य ब्लूटिपाँचे नहीं पा अनुभवानन्द-के रसने बँचेत रह मन-अनग करता है। इन्य है कराय-दिनयी दीर अला निनर्स आलम्मिको कहारोंका देग किमी मी दरह मदिन नहीं का मका, में जिल्ला अव्यक्तना मुख्या स्म पन करते हैं वे ही माकेशरिक मुर्वेमे अर्थन अर्थिया, स्वी-नकी अनुभवानन्दक्षे मेन तृप गहते है













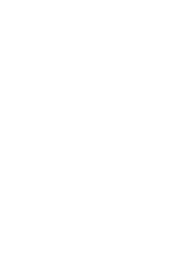
3.



## टेरवामार्गणामें भवञ्चमण ।

90)

नियाया निरायण, निर्देष, निराय, निर्देश, निरायण, सर सरी, सर्गाध-अर्था न, सर्वे देप€.न, अलील,निकाण-सन्दर्शकेन. सर्गार्च न में पान राज्यपने, अनुसारी संगति, इस भाग ही है। हैती रेएंदी प्रभूतित का की है और आनारी मांच कार्य हों मगारि मरिपे हेर्स अनुगरिय कर गई है सि, यह आया पाट-इरोंकी अन्धिय राष्ट्रद धरता हुआ भी अदद, अहरी, हिस्स, रक्षण्यो एकाविके अन्यव विकास से समार्थ । यह साहरू सीर्ट अपनी सक्षात विकास सामग्र पात्रमय पुरीहे करिये भागपा कारण है, दृष्टि रायर राष्ट्रण कृष्टि आयरमासूत र्यादार्थ अवस्थित है और मुझानवरी पहला सरस्पी रेल हुए हेल बहु हैं कर है कि बी बलावें हुनके हुई भर्द । यो १ १ वर्ग्स अन्तर होता हरा वासाम्यद साहा हैहरू ROOF TERRITORS THE STATE OF THE STATE THE nanklig ent sin fi bill bemijer, fift be والمرابع والمرابع المرابع المعطوق فالمحارب في والمرابع والمرابع the site has a secure source of the second section of the section marker, the rest for a few for \$100 miles for the the teacher of the man team of her was taking THE CARD CONTRACTOR OF STREET AND STREET and the property of the second section of the section of the



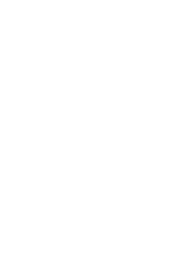
कुर्योमें कामप्र, परवर्धी तक होते हैं । परना को मन्यवृद्धीर होई-वे ही महत्त्व का मनेहरू का देहते हैं । के कींव स्वर्धा, रापीलपी, मुबर्दवर्ण, ध्यापीय स्था माडु पुरुषेपी महिने स्व लें है, दे होर कामगाँकों में इस मानेरोंके मनाम प्राप्त-ध्यानत् हे. मुहत्त्र बाद बा हत् मीली असीचे १९ वे स्वर्ण सर्वत भैद्र हैंहें हैं। सम्बन्ध हफ़ हो है स्टानेकी निर्दे स नारे हैं। हो हो। परपा ही दिरानहित मेर होने हुत थे रवालि नवर्र सी प सम्बद्ध हैते हैं, है जेन र्रोजा के हुए अभैते गरेरे इस्ट्री सहर सुप्रके (पारा है शुक्ति मार्ने मार्ने एक देवारे हाल के भई है दिसन बाजानेका बाद हैने हुए इंडिकें स्ति क स्वे हैं। सार्य है है जो है सर्वात से हुन्ने. इसका १५ हे हुम्मदारी और है दर्सन क्या नेहाँ क كيسيشكش ك ويده زيرية كالمراوة دوي والما يمال करेंद्र बर्द क्या है जिसे कर है जिसे क्यांत्र देखें के कि क्रिके सुरक्षा राजा ने **राजा** अनुवदानेहारे त्या रहते हैं।



त्य जॉन स्वित सुरायनको संस्थानक ही है की होता भाषानी है सुर्वाद अरतात्वात भाषा प्रतिमेवे निष्ठण भाषात पाना जापाल तुर्तन है। वया द्वाद्ध मुक्ती होनेदी खोखना स्परिताल सर्वेदी सुदन नेका प्रपत्न सुर्वा हो जान है रेवार्च नहीं। उसे प्रदान सामल भाविता परिमाण राष्ट्र है । महित में नामारे सम्म प्रमाणसून है, करें दिनामा भारत अन्यकार्य नहीं है करें है। इस आरक्ष क्रमानी हार धरश्रम्भीयाका समाय पानपा में हम बामीह दि का है। हर्ष परोप्ति एवं ने याही या अवाप, सिंह पुरस्पेती की हुन में ने पूर्व अनुसार जातर है की की है है है है की मुक्ताची है। में भी है जर यह है हुए जो ही भी कि नरहीं भी हुए क्षा है के रहे के न हुए में का नाव का बार्य में का प्रायस हैंद्र क्षा हरते हुए अपने अपने हैं कि हर है और में किसी कर्मा पुर र पर हुन दश्या र रोप अरोप हुन हुन र प्राप्त हुन द हमार नरपर हो। र वे भवार दमेह 



त्रिचारा तुरत निय्यादटी होता है । यदि चारों योद्धाओंमेंसे किसीका दाव पढ़ गया तो सासादन अवस्थाने जा कमसे कम एक समय उत्कृष्ट छः आवर्धके बीचमें गिरता पडता मिथ्यास्वकी भूमिमें चटा जाता है। यदि निश्रनोहनीका वश वह पढा तो वह उपशम सम्यकी दही गुड़के समान मिटे हुए सन्यक्त निय्यान्त श्रद्धानमें अन्तर्मुहर्तके हिये आजाता है और यदि कुछ मंद्रवम पापके उदयसे सन्यक-मोहर्नाने ही पकड टिया तो सम्यक्ते मर्दशान गिरकर निर्मेटमादसे चल्रमल अगार रूप श्रद्धामार्क्ने आजाता है और वन अपना नाम सयोपराम सन्यक्ती कहलाता है तथा इस मानको अविकसे अविक ६६ सागर और जबन्य एक अंतमहुर्व तक नहीं छोड़ता है। सुद्ध-निधय-नय करके इस आत्माका सम्यक्दर्शन गुण सामाविक है। परन्तु स्पाहारनय करके यही दर्शन-गुण अनादि व मादि दर्शन-मोहर नीके द्वारा मर्वथा आवर्णित ग्हनेमे निय्यास्वके नममे कहळाडा है। इमी तरह इसी एक दर्शनगुराके ही नाम मामादन,निम्न, उत्तराम, और क्षयोपराम हो जाने हैं। और तब किमी क्षयोपराम मन्यकीकी कर्म-भूमिने अध्या पेट होता मनुष्यभवमें केवर्त व श्रुतकेवरीकी पर-. सक्तरकारी सर्गति प्राप्ति होती है। तो वहीं उद्योग गुण, ससीसना स्पर त्रीप्र सम्प्रम करतात्र है। बामबंधियाँ राग आपाद्य म्यनस्य सम्यन रागाते। अध्यय हे कि एक तर रागा से दूस्यों मन्दर्भ कामे और १ रह क्षेत्र जार १ प्राप्त जा माजे क्या हे सह उस है इस सामीज उसीसण तब यह ताबित सम्बन्धत अवस्थाने जिला है। तन है। ते कि



इस समर्राष्ट्र थारीको अपनी एकाव द्यांति एक नहीं सके । नो निन स्रक्षप परिर्णातकी अञ्च सुदर्शन मेरवन् अटिंग खदामें रॉन हैं, इनकी न पारवर्ताकी मध्या और न अनेक उपमर्ग और पर्गवर्ती-की मुगपर आपना कभी विकास बनाती है। अनेक मेराने हास गार्ट हो प्रधाना व अनेक देवियों हाता की हुई निन्दा उनके हर पर्देश समान उपयोगके उपन्में मेयकाके समान क्रकर चार्न जाती है। वे माधु महात्मा भद भव-धमणकारी वर्मवनावे भीतर पुनः होता होतेन रामुल वर्ते है। इसी अन्यामें स्टब्स स्वतीद्रम प्रमापः नित्य असा अनुषम अनुष्यी वर्ष किया काता है। जिस स्पृति भारतको हरते हुए ये भाग और अपनी और कामकी स्वच्छ भीरेंदे केश्लान कील तथा जान गानती, अनुगरी पूछ सामी क चेदेशरी बलको बचले हैं। जिनके जनक सन्वर्ण बालाकों में बीमह काईन्सार्थ्य, वर्तेके देख अधिनुसार्यः सार्थः अस्ति ही ब्राह्म सर् रिकेन्ट्रीय हेर्दित है साधन धार्या मह दिनेंगेंडे सरी रुपम प्रीमान्त्रपं क्लड्री सहीत सदस्ती हेस नामा समेहर कर का हा देशका संख्या हम है। वारा<mark>नस्पर</mark>्य we will have to the second the second second a second and a second contracting 

esp e e p



भारते गुण हुआ की नोंबे समसे प्रत्येक प्रदेशमें भीगा हुआ हान्छ सनुभृतिवियाने धमपमें उत्मत्त होता हुआ अपने आपने मिद्र-शिका भाव रगला हुआ। यीतरागताबी मनेहर सरंगीमे उतल्या हुआ ऐसा हर्षयमान हो रहा है कि निमके हर्पके प्रकासके मानुत आष्ट्रापाका अध्याप तित्रको प्राप्त हो गया है तथा शिकारोने शक्षाप को अमुनमई होड़ राज समय स्थंतन उनका राभ रेत्रप उनका रुपा रे ऐस पुष्ट हो रहा है कि जिससे हमाई आपार्दे अमुच्य बीर्चवा प्रापुर्भात होता जाता है और म पुरार्क् अलाल अन्याको प्राप्त होत जात है। यद्यी दा भाग भारे ही सुद्ध और विद्या है स्थारि अमृद्रिया सम्बन्ध करित क्षाति जिल्लाने अन्याह है जह है। इस अनुहरूके विकास है जिल्ला हायहरे केंद्र ने वर्षकी वर्षणहें का सके দিবৰ সংগতি হীৰ ভাৰী হালে বহা বহা বহাটিই সহিহ ৰয का है। उद्देश हर अपने देशहरेर देशहर्म आहेंग को होता परना हो। हार हेता हेल गई है, जिस्से पह कारा हारापणारि हर देश है । यहादन की हमें क्राफ からず、かたまし、これが、たちまなり、長者 新食経費 त्र प्राप्त । स्वर्णां के स्वर्णां के स्वर्णां के स्वर्णां And demand the second second e description of



भी पूर्व बाल्डे भीड़त बर सुरा है। निवास कर्ष पत्र पहल्छ [१ स् विका अन्दरीर क्षित मध्यप स्थि अनुसार हु-गणा बागरी हानि हिंदी पहाली हरने बान वरता हुआ भी भारत भाष राष्ट्रिके नित्र निक्त आरदान दर रहा है। है र्थं समय माहत होतर उस प्रशिव्यास अपनी परिकेटन हों। स्टारेड़े के बंद सदसे दिए हो स्टारे प दक्तिये स्टार शितुरीत बराव सराम इत्ये परेटें । से देव हायांची र्षात है, हुई स्टेट रही राज्य साधानी ही एएटा होते हैं के नोह मूर है। इस देश ने नहीं करते हैं । जिस सम्बंध 👣 क्षाप्राप्ति देव 🤻 श्रारीण बरावरा घोषा नहीं है. ती सार ene केर हो १ एक्टवें के का है। यह क्या दे किये हा साम्बन भूते के कारत, एए कारते हुई भी दीन्य ही बनने हमा दार्थ हैं न कुछ प्राप्ते सुद्द कराहे. आहा स्वाह सा देते हैं। सामहा عديم في المهاكي في هست هدر في يرد عنه استشفد الشائية ا ent en si si i i i i mer mi eli mali di m \$5 hold to " a to have the sail of better thanh the hold क्षा । है । १७५ ब्रांग हैं। अनुबोध का है बराया रामार क्षाप्त and the control of the first programme and the first දෙන ගැන ය දී පත කළ ආ ආර් දෙන විසින්. it with at it sees they are a men are the section of the first section of the the was some a trade to the contract of the contract



धनी मोहतमनाशक स्वपरप्रकाशक अनुभव कर रहा है। आत्मप-दार्थ यद्यपि अरूपी इन्द्रियोंसे अतीत है तया मनके भी अगोचर है, परन्त जैसे कोई आम्रफळका स्वरूप परके द्वारा जान आमके गर्णोंका भछे प्रकार निश्चय कर जब उस आमके रसका स्वाद छेता है अथात जब अपने उपयोगको रसके साथ एकतारूप करता है तब उसकी विरुक्षण मिप्टताका अनुभव करता हुआ उसके रसमें मोह होनेके कारण साता मानता है। वसे ही यह वत्त्वज्ञानी प्रमाण नयाके द्वारा आत्माके स्वरूपको यथार्थ जान निध्यय करता है और तब अपने अमुर्तीक आत्माके उपयोगको इन्द्रिय-ग्राम और मन-मर्कटसे पृथ-कुकर परमङ्ख्य परम पारिणामिक भावके धनी कारण परमात्मामें नोड़ देता है। पुद्रल परमाणुओं के बंबमें जैसे दो गुण अधिक स्मिग्वता व रुक्तना कारण है वैमे ही इन अनुर्तीक शुद्ध भावोंके परम्पर वंचमें म्बस्यस्य उज्बलना कारण है । इस अपूर्व सम्बन्धके होनेमें ही अनुभवकी करा कीटा करूप करती है और जैसे चन्द्रकरण और नाइक कि मीरा सर्वेग अन्यव अवहे उत्पन्न करना है वैसे ही तक राममत्त्रे रहत्यम हाते । हुच उर्थे । सन्यता अर शास्त्र-नके पान के क्रमा प्राम्बद्धी बंदेर करता है है अ<sub>रि</sub>क्रमा विकास महीस विकास सम्मा महीता परन सम्मे पत्र है है का बार है । है कर से हैंगे अनुभवानन्द्रशा विराम है । भी विभाग नाम वर्गन कान ज्यात कार्य है देशे असा असा है अने हैं। इस सामाने तह दश्वेदी होडू विश्वदस्त्री कि. अन्त समाज अमेरित्रय 🗸



